अध्याय 3

समाजीकरण
(SOCIALIZATION)

समाजीकरण का अर्थ
(Meaning of Socialization)

जन्म के तुरन्त बाद मानव शिशु न सामाजिक होता है और ना ही असामाजिक। उस समय वह केवल कुछ जैविक गुणों (biological traits) वाला एक जीवित प्राणी होती है। धीरे-धीरे वह समाज की विशेष संस्कृति में पलते हुए सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तःक्रिया (interaction) करता है, जिससे उसमें नये-नये अनुभवों की प्राप्ति होती है। इन अनुभवों के फलस्वरूप बच्चा सामाजिक परम्पराओं, नियमों एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख लेता है। समाज के नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण (socialization) कहा जाता है।

पहले के समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों का ऐसा विचार था कि समाजीकरण की प्रक्रिया बचपन से प्रारम्भ होकर कुछ वर्षों के बाद समाप्त हो जाती है। परन्तु अब इस विचारधारा की मान्यता समाप्त हो गयी है और आधुनिक काल में विशेषज्ञों की सहमति इस बात पर हो गयी है कि समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र पर आकर रुकती नहीं है बल्कि पूरे जीवनकाल में चलती रहती है। **डीफ्लीयूर, डीएनटोनियो** तथा **डीफ्लीयूर**[1] (DeFleur, D'Antonio & DeFleur, 1979) के अनुसार "समाजीकरण की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है। समाजीकरण बदलती प्रत्याशाओं एवं माँगों के प्रति समायोजन की एक निरन्तर प्रक्रिया है।"

समाजीकरण की कुछ नवीनतम परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—**एटकिन्सन, एटकिन्सन** तथा **हिलगार्ड**[2] (Atkinson, Atkinson & Hilgard, 1983, 1983) के अनुसार "सामाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को सुगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।"

सेकर्ड तथा **बैकमैन**[3] (Secord & Backman, 1974) के अनुसार "अभी समाजीकरण एक ऐसी

---

1. "...the process of socialization never ends...socialization is a continuing process of adjustment to changing expectations and demands."
—DeFleur, D'Antonio & DeFleur : *Sociology : Human Society*, 1976, p. 168.
2. Socialization is the process of "shaping of individual characteristics and behaviour through the training that the social environment provides."
—Atkinson, Atkinson & Hilgard : *Introduction to Psychology*, 1983, p. 639.
3. "Currently, socialization is thought of an interactional process where by a person's behaviour is modified to conform with expectations held by members of the groups to which he belongs." —Secord & Backman : *Social Psychology*, 1974, p. 462.

Scanned by CamScanner

अन्तक्रियात्मक प्रक्रिया (interactional process) को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति का व्यवहार उन समूहों के सदस्यों की प्रत्याशाओं के अनुकूल परिवर्तित हो जाता है, जिसका वह सदस्य होता है।"

वार्केल तथा कूपर[1] (Worchel & Cooper, 1979) के अनुसार, "सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण व्यवहारों के समूह को जिस प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति सीखता है, उसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण मनुष्यों के खुले अन्तःशक्ति तथा सामाजिक समूहों द्वारा उनके नियमों एवं मानकों के प्रति अनुपालता दिखाने के लिए दिया गया दवाब का एक संयोग है।"

किम्बल यंग[2] (Kimball Young, 1957) के अनुसार, "समाजीकरण व्यक्ति का सामाजिक और सांस्कृतिक दुनिया से परिचय कराने, उसे समाज तथा उसके विभिन्न समूहों में एक सहभागी सदस्य (participant member) बनाने तथा उस समाज के मानकों (norms) एवं मूल्यों (values) को स्वीकार करने को प्रेरित करने वाली प्रक्रिया है।"

वर्केल तथा कूपर[3] (Worchel & Cooper, 1979) के अनुसार, "वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक व्यक्ति सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण व्यवहारों के भंडार (repertoire) को सीखता है, समाजीकरण कहलाता है।"

ऊपर दी गयी परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर हमें समाजीकरण के स्वरूप के बारे में एक स्पष्ट ज्ञान होता है। इन परिभाषाओं के विश्लेषण करने में हमें समाजीकरण के बारे में निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते हैं—

(i) समाजीकरण सीखने का एक उपसेट हैं (socialization is a subset of learning) — समाजीकरण सीखना का एक उपसेट (subset) इस अर्थ में माना गया है कि समाजीकरण के लिए सीखने की प्रक्रिया का होना अनिवार्य है। इस पक्ष पर ऊपर की सभी परिभाषाओं में बल डाला गया है। अगर व्यक्ति में सीखने की प्रक्रिया नहीं होगी, तो समाजीकरण भी नहीं होगा। परन्तु सभी तरह के सीखना को समाजीकरण नहीं कहा जाता है। सिर्फ उन्हीं प्रक्रियाओं का सीखना समाजीकरण में सम्मिलित किया जाएगा जो सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण होता है तथा जिससे अखंड (substained) सामाजिक अन्तःक्रिया में मदद मिलती है। अलब्रेक, थॉमस तथा चाडविक[4] (Albrecht, Thomas & Chadwick, 1980) ने इस पर अधिक बल डालते हुए कहा है, "सभी प्रकार का सीखना आवश्यक

---

1. "The process by which a person learns a repertoire of socially important behaviours is known as socialization. Socialization is a combination of the human beings, unfolding potential and the pressure that social groups apply to attain conformity to their rules and norms."
—Worchel & Cooper : *Understanding Social Psychology*, 1979, p. 30.

2. "Socialization... will mean the process of inducting the individual into the social and cultural world of making him a participant member in society and its various groups and inducing him to accept the norms and values of that society."
—Kimball Young : *Handbook of Social Psychology*, 1957, p. 89.

3. "The process by which a person learns a repertoire of socially important behaviours is known as socialization."
—Worchel & Cooper : *Understanding Social Psychology*, 1979, p. 30.

4. "... not all learning is necessarily socialization. Socialization entails learning those things that are necessary for sustained social interaction."
—Albrecht, Thomas & Chadwick : *Social Psychology*, 1980, p. 80.

Scanned by CamScanner

रूप से समाजीकरण नहीं कहलाता है। समाजीकरण में उन्हीं चीजों का सीखना सम्मिलित होता है जो अखण्ड सामाजिक अन्तःक्रिया (sustained social interaction) के लिए आवश्यक है।" इसका मतलब यह हुआ कि यदि व्यक्ति एक सभ्य समाज में पाले-पोसे जाने पर भी चोरी करना सीखता है, तो इस तरह का सीखना समाजीकरण में सम्मिलित नहीं किया जायेगा क्योंकि यह समाज के नियमों द्वारा अनुमोदित नहीं है और इससे सामाजिक अन्तःक्रिया की अखण्डता पर बुरा असर पड़ता है।

(ii) समाजीकरण चूँकि समाज के मानकों (norms) तथा मूल्यों (values) से सम्बन्धित होता है, अतः इस पर समय एवं स्थान का काफी प्रभाव पड़ता है। जैसा कि हम जानते हैं, सामाजिक मानक (social norms) तथा सामाजिक मूल्य (social values) सदा एक समान नहीं रहते हैं। समय के साथ इसमें परिवर्तन होता जाता है। फलस्वरूप, समय बदलने से व्यक्ति को बदले हुए सामाजिक मानकों एवं मूल्यों के अनुसार सामाजिक व्यवहार को सीखना पड़ता है। जैसे—भारतीय समाज का ही उदाहरण ले लीजिए। आज से 50-60 वर्ष या इससे और पहले स्त्रियों को परदा करना या घूँघट करना सिखलाया जाता था परन्तु वर्तमान समय में इन्हें ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। चूँकि भिन्न-भिन्न जगहों में सामाजिक मानक एवं मूल्य अलग-अलग होते हैं, अतः समाजीकरण की प्रक्रिया में भी स्थान में परिवर्तन होने से कुछ भिन्नता दिखलाई देती है। जैसे—भारत में कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ पत्नी पति को हमेशा 'आप' कहकर सम्बोधित करती है।

(iii) समाजीकरण में सांस्कृतिक आत्मसात्करण (cultural assimilation) तथा सांस्कृतिक संचरण (cultural transmission) की प्रक्रिया सम्मिलित होती है। इस पक्ष पर अन्य लोगों की तुलना में किम्बल यंग (Kimball Young) ने सबसे अधिक बल डाला है। समाजीकरण में समाज के सांस्कृतिक मानकों (cultural norms) तथा संस्कृति के अन्य तत्त्वों को आत्मसात् (assimilate) किया जाता है। इतना ही नहीं, समाजीकरण द्वारा समाज की नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से उसकी संस्कृति को ग्रहण करता है और फिर उसी संस्कृति को उसके बाद की पीढ़ी के द्वारा ग्रहण किया जाता है। इस तरह से समाज में सांस्कृतिक संचरण (cultural transmission) समाजीकरण द्वारा होता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति समाजीकरण द्वारा अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से भली-भाँति परिचित हो जाता है।

(iv) समाजीकरण में व्यक्त के अहम् या आत्म (self) का विकास होता है। जब वह समाज के अन्य लोगों के साथ अन्तःक्रिया (interaction) करता है तो इससे उसे दूसरे लोगों के अलावा स्वयं को भी समझने का मौका मिलता है। सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord & Backman) की परिभाषा में इस पक्ष पर अधिक बल डाला गया है क्योंकि इन लोगों ने समाजीकरण को एक अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया (interactional process) माना है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण सामाजिक सीखना (social learning) की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से प्रभावित होकर अपने अहम् या आत्म (self) को उनके मानकों (norms) एवं मूल्यों (values) के अनुसार विकसित करता है।

समाजीकरण की अवस्थाएँ
(Stages of Socialization)

समाजीकरण, जैसा कि ऊपर कहा गया है, एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती है। ऐसा समझना सर्वथा भूल होगी कि समाजीकरण अर्थात सामाजिक सीखने (social learning) की

Scanned by CamScanner